NBT
नवभारत टाइम्स

आज है ऑटिस्टिक प्राइड डे | ऑटिस्टिक बच्चों को बीमार नहीं कहिए, प्यार करिए, एनबीटी ने ऑटिस्टिक बच्चे की फैमिली के साथ गुजारा एक दिन

तरस नहीं इन्हें प्यार चाहिए, खो न जाएं ये तारे जमीन पर...!

Mohd.Asgar@timesgroup.com

दिलशाद गार्डन स्थित अपने घर में दादी के साथ मस्ती करता शिवांग

जूऊंऊंऊं... जूं जूं.. शूम्मम.. ये आवाजें हैं 10 साल के शिवांग की, जो अपनी दुनिया में मगन है। कोई उसे डांट दे तो वह सहम जाता है। वह बोलकर नहीं बता सकता कि उसको भूख लगी है या फिर पेट दर्द है, लेकिन जब उसका नाम पुकारो तो दौड़ा चला आता है, क्योंकि उसे पता है शिवांग उसका नाम है। दिलशाद गार्डन में रहने वाला शिवांग पढ़ नहीं पाता, लेकिन मोतियों की माला टीचर के सपोर्ट से सूई धागे को देखे बिना बना लेता है। ये उस स्पेशल बच्चे की कहानी है, जिसे ऑटिजम स्पैक्ट्रम डिसॉर्डर है। शिवांग के साथ दो-तीन घंटे गुजारे तो बहुत सी ऐसी बातें सामने आईं, जो सभी लोगों को भी समझ लेनी चाहिए।

शिवांग की कहानी आज इसलिए, क्योंकि 18 जून को ऑटिस्टिक प्राइड डे होता है, जिसे पहली बार एस्पिस फॉर फ्रीडम नाम के ग्रुप ने मनाया। आज इंटरनैशनल लेवल पर लोगों को अवेयर करने के लिए मनाया जाता है। ऑटिजम वो अवस्था है जो बर्फी फिल्म में प्रियंका चोपड़ा और माय नेम इज खान में शाहरुख खान को थी। शिवांग ढाई साल का था, जब उसके पैरंट्स को पता चला था कि वह ऑटिस्टिक है। तमाम बड़े हॉस्पिटल में इलाज कराने के बाद उनके पिता वी.ए. गणेश ने इस सचाई को एक्सेप्ट किया। फिर उसको वैसे ही ट्रीट करना शुरू किया। प्यार के साथ। स्पेशल केयर के साथ। इस डिसॉर्डर के बारे में पता चलने के करीब डेढ़-दो साल बाद निष्ठा नाम की संस्था बनाई, ताकि और लोगों को अवेयर कर सकें। स्पेशल बच्चों के लिए स्कूल चलाने लगे, जहां आज 40 बच्चे हैं। वो उन्हें सामाजिक व्यवहार सिखाते हैं। शिवांग के मम्मी पापा अलग-अलग सेक्टर में जॉब करते हैं, इसलिए शिवांग अपने दादा-दादी के साथ घर पर रहता है। शिवांग अपने मेंटर वीरेंद्र की हर बात पर रिस्पॉन्स देता है।

शिवांग को भूख लगी तो दादी का हाथ पकड़कर किचन में ले जाने लगा। दादी सोमा सुंदरी खाना परोसते हुए कहती हैं, लोग अवेयर नहीं हैं, इसलिए इसका मजाक बनाते हैं। एक बार तो मंदिर के अंदर शिवांग ने किसी थाली से फूल उठा लिए थे तो उन्होंने बहुत गुस्सा किया कि ऐसे बच्चों को लाती क्यों हो। वो सवाल करती हैं क्या इन बच्चों को जीने का हक नहीं है, क्या इन्हें दुनिया नहीं देखनी चाहिए, क्या इन्हें घर में बंद रखना चाहिए? रिश्तेदार तो अब समझने लगे हैं। वो प्यार करते हैं, लेकिन पार्क में घूमने जाते हैं तो लोग शिवांग को घूर-घूरकर देखते हैं। लोग दया की भावनाओं को बढ़ावा देते हैं, बजाय अपनी समझ को बढ़ावा देने के।

वीरेंद्र बताते हैं कि एक बार कहीं से आ रहे थे तो एयरपोर्ट पर किसी ने इसको नहीं देखा, लेकिन जब यहां लेकर निकलते हैं तो मुड़-मुड़कर, रुक रुककर देखते हैं। जबकि ये कोई अजूबे नहीं, ब्लकि प्यार के भूखे हैं। ये बच्चे हमें बहुत कुछ सिखाते हैं, जैसे गुस्सा नहीं करना है। चिल्लाना नहीं है, क्योंकि ऑटिस्टिक बच्चे इन सबसे परेशान होते हैं। ये बच्चे हमारे बनाए गए सामाजिक ताने-बाने में फिट नहीं होते, लेकिन समाज को प्यार की सीख देते हैं। ये इनकी दुनिया है। प्यार की दुनिया।

क्या है ऑटिजम?

यह एक न्यूरोलॉजिकल डिसॉर्डर है, जो बातचीत और दूसरे लोगों से व्यवहार करने की क्षमता को सीमित कर देता है। हर एक बच्चे में इसके अलग-अलग लक्षण होते हैं। कुछ बच्चे बहुत जीनियस होते हैं। कुछ को सीखने-समझाने में भी परेशानी होती है। ये बच्चे बार-बार एक ही तरह का व्यवहार करते हैं। 40 पर्सेंट ऑटिस्टिक बच्चे बोल नहीं पाते। औसतन 68 में से एक बच्चा ऑटिजम का शिकार होता है, क्यों होता है नहीं पता। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इंफेक्शन, प्रेग्नेंसी के दौरान मां की डाइट (शराब या दवाएं) और जेनेटिक्स वजह हो सकती है।

एक्सपर्ट ने बताया, क्या करें पैरंट्स

- प्रेग्नेंसी में महिला को अल्कोहल, तंबाकू से बचना चाहिए।
- ईएनटी के अलावा साइकैट्रिस्ट, साइकोलॉजिस्ट, न्यूरोलॉजिस्ट, स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट मददगार होते हैं।
- ऑटिस्टिक बच्चे धीरे-धीरे बात को समझाते हैं। ऐसे में पहले उन्हें समझाएं फिर बाद में बोलना सिखाएं।
- ऑटिस्टिक बच्चे सोशल सर्कल में जाने से परेशान हो जाते हैं, लेकिन उन्हें आउटिंग पर जरूर ले जाएं।
- ऑटिस्टिक बच्चों से बातें करें और उन्हें किसी चर्चा का हिस्सा बनाएं।
- खेल में उन्हें नए शब्द सिखाने की कोशिश करें।

जितना हो सके बच्चों को तनाव से दूर रखें।

- डॉ. एके साहनी, न्यूरोलॉजिस्ट, इंडियन स्पाइनल इंजरीज सेंटर